मनोज चित्र कथा
मूल्य 4.00
राम-रहीम और मौत का हंगामा
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
मनोज कॉमिक्स
VIJAY KADAM

मनोज चित्र कथा
मूल्य 15.00
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00
राम-रहीम
मौत का हंगामा
मनोज कॉमिक्स डाइजेस्ट

राम-रहीम और मौत का हंगामा

●लेखक :- बिमल चटर्जी.   ●चित्रांकन- दिलीप कदम. हरिश्चंद्र चव्हाण. (त्रिशूल कॉमिको आर्ट)

एक रात कलियुग का भगवान् उर्फ फोमांचू नामक एक विचित्र इंसान ने राम-रहीम को चैलेंज किया कि वह हिन्दुस्तान के सुविख्यात वैज्ञानिक प्रोफेसर भास्कर का अपहरण करके ले जायेगा।

हा-हा-हा! याद रखना. ठीक दो दिन बाद।

यही नहीं, प्रोफेसर भास्कर ने भी सबकुछ जान-सुनकर अपनी सुरक्षा का कुछ विशेष प्रबन्ध किया।

हमारे बीच एक अदृश्य दीवार है, जिस पर किसी अस्त्र का कोई प्रभाव नही पड़ेगा।

और जब वास्तव में फोमांचू उस कमरे में प्रकट हुआ तो न केवल वह अपने सुदर्शन चक्र से उस अदृश्य किन्तु अभेद्य दीवार को काटने में असफल हुआ...
...बल्कि प्रोफेसर भास्कर द्वारा दागी गई विचित्र किरणों के जाल में भी फंस गया।
आह!
मजबूर हो फोमांचू को अपनी जान बचाकर वहां से भागना पड़ा।
फिलहाल मैं जा रहा हूं शैतान छोकरो, लेकिन जल्दी ही तुम सबसे निपटूंगा।
वहां से फोमांचू सीधा जोगाम्बो के पास पहुंचा, जिसके साथ मिलकर उसने प्रोफेसर भास्कर के अपहरण की योजना बनाई थी।
लो मिस्टर फोमांचू! अपनी अमानत संभालो और अपना वचन पूरा करो।
हा-हा-हा! तुम मूर्ख हो जोगाम्बो।
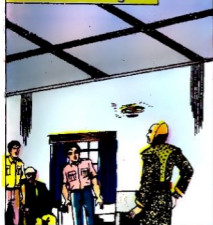
क्या मतलब?
मतलब यह कि जिसे तुम उठाकर लाये हो, वह प्रोफेसर भास्कर नहीं, बल्कि सी॰आई॰डी॰ का एक इंस्पेक्टर है।
और कोमांचू ने इंस्पेक्टर के चेहरे से भास्कर का मेकअप हटा दिया।
ओ नो!
यह सच है, इसलिए अब मैं तुम सबको इनाम देने की बजाय मौत दूंगा।
और —
बचाओ sss!
हाय!
आई... ई...ई!
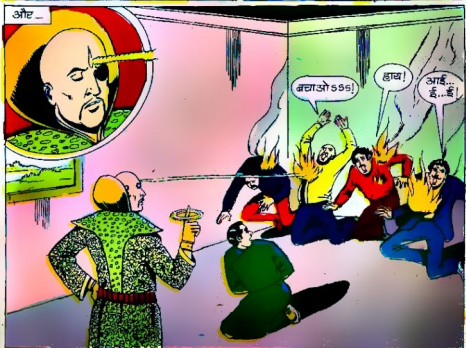
जौगाम्बो और उसके साथियों का अन्त कर फोमांचू ने भास्कर के मेकअप से सी.आई.डी. इंस्पेक्टर को बंधन मुक्त कर दिया।

तुम एक देशभक्त और बहादुर इंसान हो, इसलिए तुम्हें छोड़ रहा हूं। जाओ, चले जाओ यहां से।

चमन वही जासूस था, जिसे जोगाम्बो और उसके साथी प्रोफेसर भास्कर समझकर उठा ले गये थे!
शुक्र है, मिस्टर चमन सकुशल वापस लौट आये।
अब देखना यह है कि वे क्या किस्सा बताते हैं।
और जब जासूस चमन ने आकर उन्हें सारी बात बताई तो वे हैरत में आ गये।
सचमुच यह चचा फोमांचू भी बड़ा विलक्षण व्यक्ति है।
उसके बाद कुछ औपचारिक बात-चीत करने के पश्चात् राम-रहीम प्रोफेसर भास्कर से विदा लेकर अपने घर की ओर चल पड़े।

लेकिन उनकी कार अभी प्रोफेसर भास्कर की कोठी से कुछ ही दूर पहुंची थी कि–
भड़ाम
भड़ाम
अरे, यह क्या हुआ?
टायर बर्स्ट हो गये।
लेकिन कैसे?
अबे यार, यह मैं क्या जानूं। नीचे उतरकर देखते हैं।

दोनों नीचे उतरे-
ओह! अगले दोनों टायर बर्स्ट हैं।
पिछले दोनों टायर भी बर्स्ट हैं राम भइया!
अजीब बात है! यह अनहोनी आखिर हो कैसे गई?
हां, बात तो सोचने की है। चारों टायरों का एक साथ बर्स्ट होना मात्र संयोग नहीं हो सकता।
तभी-
हा-हा-हा! यह वास्तव में संयोग नहीं है मेरे प्यारे भतीजो।
ओह, तुम!
क्यों? चौंक क्यों गये भतीजे?
तुम, और इस समय यहां? क्या चाहते हो?

बस, ज़रा तुम दोनों के दिमाग दुरुस्त करना चाहता हूं।
वाह! क्या इतना डर गये हमसे?
फोमांचू ने जीवन में कभी डरना नहीं सीखा मेरे बच्चो! सिर्फ डराना सीखा है...
...तुम इस सुदर्शन चक्र की शक्ति के बारे में जानना चाहते थे न...
...सो, आज मैं तुम्हें इसकी शक्ति का छोटा-सा नमूना दिखाता हूं।
कहने के साथ ही फोमांचू ने दस्ताने में लगा एक बटन दबा दिया, तुरन्त ही उसके गले में पड़ी लॉकेट नुमा स्क्रीन पर राम-रहीम के चेहरे प्रकाशमान हो गये।

फिर दूसरा बटन दबाते ही-
हा-हा-हा! भतीजो, यदि तुम दोनों इस चक्र से अपनी गरदन बचा सकते हो तो बचा लो!
रहीम, भागो!
अगले ही पल-
हा-हा-हा! कब तक भागोगे बच्चो!
राम-रहीम ने पूरी शक्ति से दौड़ते हुए कई मार्ग बदले।
???
कई भीड़-भाड़ वाले इलाकों से गुजरे, लेकिन चक्र ने उनका पीछा नहीं छोड़ा।
अरे, वह देखो!
हे भगवान! कहीं मैं सपना तो नहीं देख रही! सुदर्शन चक्र और इस युग में!
वह अद्भुत दृश्य देखकर हर जगह आतंक छा गया।
आ-ई-ई-ई!
भागो!

सर! वह चक्र तो शायद उन दोनों लड़कों को मौत के घाट उतारने जा रहा है।
हां, हमें उनकी मदद करनी चाहिए।
पीछा करो!
यस सर!
धांय-धांय
लेकिन इंस्पेक्टर की फायरिंग का चक्र पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
सर, आपका इस चक्र के बारे में क्या विचार है! वह ईश्वरीय शक्ति का प्रतीक है या कोई वैज्ञानिक आविष्कार?
कुछ नहीं कह सकता। लेकिन यह सब कलियुग का चमत्कार अवश्य है।
इधर राम-रहीम किसी तरह चक्र की मार से स्वयं को बचाते हुए दौड़े ही जा रहे थे।
हफ्फ! हफ्फ! राम भइया, अब मुझसे नहीं दौड़ा जा रहा! टांगें जवाब दे रही हैं।
हिम्मत से काम लो रहीम, वरना वह चक्र हमारी मौत बन जायेगा।

लेकिन आखिर कब तक ऐसे ही दौड़ते रहेंगे? वह चक्र तो हमारा पीछा छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहा।
जब तक दम में दम है, हमें अपने प्राण बचाने की कोशिश तो करते ही रहना चाहिए! फिर जो ईश्वर को मंजूर है, होगा!
लेकिन नदी के ऊपर बने एक ऊंचे पुल पर पहुंचते ही रहीम ने पूरी तरह से हिम्मत छोड़ दी।
हफ्फ! हफ्फ! बस भइया, अब मुझमें और दौड़ने की शक्ति नहीं।
हफ्फ! हफ्फ! तब हमारी मौत निश्चित है।
हफ्फ! हफ्फ! अब चाहे मौत आये या प्रलय हो जाये, मुझमें एक कदम भी आगे बढ़ाने की शक्ति नहीं है।
हफ्फ! हफ्फ! हे ईश्वर! क्या हमारे भाग्य में ऐसी ही असमर्थता भरी मौत लिखी है।
चक्र शनैः-शनैः उनके निकट आने लगा।
रहीम, अब चक्र से बचने का एक ही उपाय है। तुरन्त नदी में कूद जाओ। जल्दी करो।
ठीक है। कोमांचू के इस चक्र से मरने से तो नदी में कूदकर मरना ही उचित होगा!
सर्र-र्र-र्र

दोनों लपककर रेलिंग पर चढ़ गये।

कूद जाओ।

और इससे पहले कि चक्र उन दोनों की गरदन धड़ से जुदा कर देता–

छपाक

काफी ऊंचाई से कूदने के कारण राम–रहीम पानी की गहराई में उतरते चले गये।

...लेकिन सोचने वाली बात तो यह है कि चक्र पानी की सतह पर यकायक स्थिर कैसे हो गया? उसका घूमना भी बंद हो गया है।
सर, वह देखिए, चक्र अब घूमता हुआ ऊपर आ रहा है।
हां, शायद वह वापस लौट रहा है।
जब चक्र ऊपर उठकर उनके ऊपर से होकर गुजरा—
धांय धांय
लेकिन चक्र पर इस बार भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वह जिधर से आया था, उसी दिशा में लौट गया।
सर, क्या उस चक्र का रहस्य जानने के लिए उसका पीछा करें?
कोई जरूरत नहीं। हम उसकी गति को पार नहीं पा सकेंगे।
तब तक वहां काफी भीड़ भी एकत्रित हो चुकी थी।
रामसिंह, तुम वायरलेस सैट द्वारा हैडक्वार्टर से संपर्क करो और इस घटना से सूचित करो, ताकि उन लड़कों की लाशों की जल्द-से-जल्द खोज हो सके।
यस सर!

उधर अपने अड्डे पर फोमांचू चौंका—
ओह! रॉकेट स्क्रीन से उन दोनों के चेहरे एकायक कैसे गायब हो गये? क्या दोनों चक्र की मार से बच गये हैं...
...लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? वे दोनों चक्र की रफ्तार से तेज नहीं भाग सकते और समय भी इतना नहीं हुआ है कि उन दोनों ने बहुत दूरी तय कर ली हो और चक्र की मारक रेंज से बाहर हो गये हों...
...फिर?
ओह! चक्र वापस लौट आया।
शीघ्र ही चक्र उसके सीधे हाथ की उंगली पर आकर स्थिर हो गया।
मुझे उनकी खोज-खबर लेनी चाहिए। यदि वे जीवित हैं तो मुझे इसका कारण जानना ही होगा।
और फोमांचू ने न जाने अपने वस्त्रों के भीतर हाथ डालकर क्या किया कि वह तुरन्त रोशन खाके में बदल गया।
चक्र एक सौ बीस डिग्री के कोण में उत्तर की ओर गया था। मुझे उधर ही चलना चाहिए।
अगले ही पल वह अदृश्य हो गया।

राम-रहीम काफी देर तक पानी
की ओर गोता खाने के पश्चात
... और हाथ-पैर मारते हुए शीघ्र ही सतह पर आ गये।
बायीं ओर किनारे की ओर बढ़ो।
नारे पर पहुंचकर—
अब ?
हमें मुख्य मार्ग से न जाकर कच्चे मार्ग से मुख्य सड़क तक पहुंचना चाहिए, वरना लोग-बाग व पुलिस वाले उल्टे-सीधे प्रश्न करके हमें परेशान करेंगे।
और राम-रहीम एक कच्चे मार्ग से होकर आगे बढ़ने लगे।
७, बैंक स्ट्रीट।
बैठिए साहब!

अगले पल टैक्सी राम-रहीम को लिए दौड़ी जा रही थी।
इधर कोमांचू अदृश्य रूप में पुल के ऊपर मौजूद भीड़ के मध्य पहुंचा तो लोगों की बातचीत सुनकर उसे असलियत का पता चलते देर नहीं लगी।
हुम्म! अब समझा! पानी में काफी गहराई में पहुंचने के कारण ही वे दोनों शैतान छोकरे बच गये।
चलो, यह महत्त्वपूर्ण जानकारी भी आगे चलकर मेरे लिए लाभदायक सिद्ध होगी।
और कोमांचू वहां से गायब हो गया।
इधर राम-रहीम जब घर पहुंचे-
अरे, यह तुम दोनों ने अपनी क्या हालत बना रखी है?
मम्मी...वो ... वो...!
मैं पूछती हूं, आखिर तुम दोनों करते क्या फिर रहे हो? तुम दोनों कल सुबह से अब तक कहां गायब रहे...

... देखो राम, मुझे सबकुछ सच-सच बता दो, वरना मैं आज ही तुम्हारे डैडी को तुम दोनों की हरकतों के बारे में सबकुछ लिख भेजूंगी।

मम्मी, मैंने आपसे कहा था न कि हम अपने दोस्त की शादी में जा रहे हैं?

हां, कहा था। और मैं यह भी जानती हूं कि तुमने रात भी वहीं बिताई है, लेकिन मेरा प्रश्न फिर वही है कि तुम दोनों की यह हालत कैसे हुई...

...और तुम कार लेकर गये थे, फिर टैक्सी में कैसे आये...

... जबकि मोटरसाइकिल भी तुम दोनों के कथनानुसार खराब होने के कारण किसी वर्कशाप में पड़ी है।

रहीम अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि राधादेवी ने घबराकर
न दोनों को अपने सीने से लिपटा लिया।
हाय राम! तुम दोनों को कोई चोट आदि तो नहीं लगी।
बिल्कुल भी नहीं लगी आंटी! हाँ, कपड़ों का जरूर सत्यानाश हो गया है।
हे ईश्वर! तेरा लाख-लाख धन्यवाद, जो तूने मेरे बच्चों को एक बड़ी दुर्घटना से बचा लिया...
...कपड़ों की चिन्ता छोड़ो बेटे। कपड़े और बन जायेंगे। तुम दोनों ठीक-ठाक हो, यही मेरे लिए बहुत है...
...जाओ, अब नहा-धोकर दूसरे कपड़े पहन लो। तब तक मैं तुम दोनों के लिए नाश्ता लगाती हूँ।
ठीक है।
कुछ देर बाद नाश्ते की टेबल पर—
लो, पेट भरकर नाश्ता करो।
वाह! मूंग की दाल का हलवा और आलू के परांठे!

लेकिन प्रसन्नता से रहीम ने जैसे ही परांठे की प्लेट की ओर हाथ बढ़ाया-
आई
ओह!
हे राम!
इसी तरह सारी प्लेटें हवा में उठ गईं।
आ-ई-ई-ई-! भ... भूत... भागो बेटा!
घबराओ नहीं मम्मी! यह भूत का नहीं, बल्कि अपने आपको कलियुग का भगवान कहने वाले व्यक्ति का काम लगता है।
क्यों मिस्टर रोमांचू? मैंने ठीक कहा है न?
हा-हा-हा! तुमने बिल्कुल ठीक कहा है भतीजे!
तुम्हारा वार खाली गया चचा! क्या अब तुम यहां जूते खाने आये हो?
बकवास मुझे पसंद नहीं भतीजे। यदि मैं चाहूं तो इसी समय तुम दोनों को जलाकर राख कर सकता हूं...

... लेकिन न जाने क्यों मैं तुम्हें इस समय मारना नहीं चाहता, और जीवित रहने का एक और मौका देना चाहता हूं...
... प्रोफेसर भास्कर को बचाकर तुमने मुझे जो शिकस्त दी है, उसकी सज़ा तुम्हें अवश्य मिलेगी, क्योंकि पराजय का मुंह देखना मेरी शान के खिलाफ है...
... लेकिन मैं तुम्हें चौबीस घण्टे और जीने का मौका देता हूं। उसके बाद अपने भगवान से अपने तमाम गुनाहों की माफी मांगकर मरने के लिए तैयार हो जाना...
???
!!!
... लो, अब डटकर नाश्ता कर लो। मैं चलता हूं।
???
!!!

प्लेटें जैसे ही टेबल पर आकर लगीं, फोमांचू की आवाज आनी बंद हो गई।

राम बेटे! आखिर यह सब क्या चक्कर है? यह अदृश्य आवाज किसकी थी और वह तुम्हारे प्राण क्यों लेना चाहता है?

मम्मी! आपने अखबारों में फोमांचू के बारे में पढ़ा होगा।

तब राम ने कुछ भी छिपाये बिना राधादेवी को सबकुछ सच-सच बता दिया।

सबकुछ सुनकर राधादेवी बुरी तरह घबरा उठीं।

हे भगवान! अब क्या होगा? उस शैतान ने तो तुम्हें चौबीस घण्टे की मोहलत दी है। उसके बाद वह तुम्हारे प्राण ले लेगा।

तुम चिन्ता मत करो मम्मी! वह हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ पायेगा। बस, तुम्हें हमें कुछ दिन घर से बाहर रहने की इजाजत देनी होगी।

नहीं-नहीं, इन हालातों में मैं तुम्हें घर से बाहर रहने की इजाजत हरगिज़ नहीं दे सकती। तुम्हारे प्राण खतरे में हैं।

हम बाहर रहकर ही बच सकते हैं मम्मी! घर में तो वह कलियुग का भगवान कभी भी आ सकता है।

ओह!

लेकिन बाहर तुम दोनों रहोगे कहां और अपनी रक्षा कैसे करोगे?
हम प्रोफेसर भास्कर अंकल के यहां सुरक्षित रहेंगे मम्मी! और यदि कोमांचू वहां पहुंचा तो उसे पकड़ने की भी पूरी कोशिश करेंगे!
पहले तो राधादेवी राम की बात मानने के लिए तैयार नहीं हुईं। लेकिन राम के काफी समझाने-बुझाने पर वह तैयार हो गईं।
ठीक है। तुम प्रोफेसर भइया के पास चले जाओ। लेकिन तुम हर घण्टे बाद मुझे फोन पर अपने बारे में खबर करते रहोगे।
ओह, यू आर ग्रेट मम्मी!
बस-बस, प्यार का यह झूठा नाटक बंद करो और चुपचाप नाश्ता कर लो। आज मुझे पहली बार मालूम हुआ है कि तुम दोनों झूठ बोलना भी बड़ी अच्छी तरह से जानते हो।
क्या मतलब?

मतलब दोस्त की बहन की शादी से वापस लौटते समय गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया और मोटरसाइकिल...!
मम्मी... वो... वो... वो...!
राधादेवी की बात सुनकर राम-रहीम झेंपकर अपनी गुद्दी खुजाने लगे।
नाश्ते से निवृत्त होकर राम-रहीम अपने कमरे में पहुंचे-
राम भइया! क्या तुम सचमुच प्रोफेसर अंकल के यहां जा रहे हो?
हां, तुम फटाफट सूटकेस तैयार कर लो। और हां, उसमें मेरा और अपना सुपर सूट रखना मत भूलना...
...क्योंकि अब हमें हमेशा सुपर सूट पहनकर रहना होगा।
ठीक है।
फिर रहीम सूटकेस तैयार करने लगा और राम फोन पर चीफ मुखर्जी के नम्बर डायल करने लगा। सम्बन्ध स्थापित होने पर-
किर्र-र्र-र्र-
हैलो, चीफ! मैं राम बोल रहा हूं।

अरे हां राम बेटे, कहो, क्या बात है? मैं तुम्हारे ही फोन का इंतजार कर रहा था।
लगता है, आज सुबह हमारे साथ जो घटना घटी है, उसके बारे में आपको पता चल चुका है।
हां, इसीलिए तो मैं तुम दोनों के बारे में बेहद चिन्तित था। कहो, खैरियत से तो हो न?
फिलहाल तो खैरियत से हैं। हां, हो सकता है अगले चौबीस घण्टे बाद खैरियत से न हों।
तब राम ने चीफ को कुछ देर पहले कोमांचू से हुई सारी बात बता दी। सबकुछ सुनकर—
व्हाट?
यानी कोमांचू घबराकर अब तुम दोनों के प्राण लेने पर उतारू हो गया है।
घबराकर नहीं अंकल, बल्कि शर्मिन्दा होकर। वैसे हम इसी समय प्रोफेसर भास्कर की कोठी पर जा रहे हैं...

...वहां हम सुरक्षित भी रहेंगे और रोमांच से मुकाबला करने का भी कोई उपाय करेंगे।
यह ठीक रहेगा, लेकिन तुम मुझसे फोन पर बराबर संपर्क बनाये रखना।
ठीक है।
सम्बन्ध विच्छेद करने के बाद—
क्यों रहीम, सूटकेस तैयार कर लिया?
बिल्कुल कर लिया भइया।
तो आओ, मम्मी से विदा लें।
चलो।
कुछ देर बाद—
बेटा, अपना ध्यान रखना और बराबर मुझे फोन करते रहना।
ठीक है मम्मी, लेकिन आप भी अपना ध्यान रखना।

राधादेवी से विदा लेकर राम-रहीम ने बंगले से बाहर निकलकर एक टैक्सी पकड़ी और प्रोफेसर भास्कर की कोठी की ओर चल पड़े।
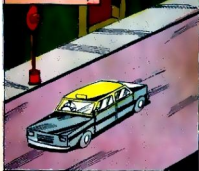
लगभग आधे घण्टे पश्चात् दोनों प्रोफेसर भास्कर के साथ उनके ड्राइंगरूम में बैठे थे।

बेटे, तुमने जो बात बताई उसे सुनकर तो मुझे फोमांचू के इरादे अब अच्छे नहीं लगते। अच्छा हुआ जो तुम मेरे यहां आ गये।

वह तो ठीक है अंकल! लेकिन इस बात की कोई गारन्टी नहीं कि हम और आप यहां पूरी तरह से सुरक्षित हैं।

फोमांचू के पास ऐसे साधन हैं कि वह हमें ढूंढता हुआ यहां भी पहुंच जायेगा।

लेकिन यहां आने से पूर्व उसे दस बार सोचना अवश्य पड़ेगा। क्योंकि कल रात उसे पराजय का मुंह देखना पड़ा था...

...यही नहीं, यदि उसके पास अदृश्य किरणें न होतीं तो शायद इस समय वह हमारा कैदी होता।

अंकल, आप एक बात भूल रहे हैं। अब उसे आपकी शक्ति का पता चल चुका है। इसलिए वह और भी तैयारियों के साथ यहां आसकता है और मुझे विश्वास है कि इस बार वह पूरी तरह सावधानी भी बरतेगा।

आखिर तुम कहना क्या चाहते हो?
सिर्फ यही कि उसने हमें मौत के घाट उतारने के लिए चौबीस घण्टे का समय दिया है, और मैं चाहता हूं कि चौबीस घण्टों से पहले आप चक्र से बचने के लिए विरोधी तरंगों का आविष्कार कर लें।
ओह!
सुनो बेटे, यह कार्य इतनी जल्दी सम्भव तो नहीं, फिर भी मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश करूंगा!
आपके कार्य में हम भी आपकी मदद करेंगे अंकल। यदि वह तरंगें तैयार हो गईं तो कोमांचू हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ पायेगा!
तो चलो, तुम दोनों इसी समय मेरे साथ प्रयोग-शाला में चलो। हम इसी वक्त से अपने कार्य में जुट जाते हैं। वैसे भी देर करने से कोई फायदा नहीं।
ठीक है, चलिए।

राम-रहीम उसी समय प्रोफेसर के साथ उनकी प्रयोगशाला में पहुंच गये और उनके कार्य में हाथ बंटाने लगे।
दिन-रात की कड़ी मेहनत के पश्चात्-
लो बेटे, आखिर हमारी मेहनत रंग लाई। चक्र की विरोधी तरंगें इन लॉकेटों में हैं। एक-एक लॉकेट तुम दोनों पहन लो और एक मैं पहन लेता हूं...

...जब तक ये लॉकेट हमारे गले में रहेंगे, चक्र हमारी गरदन को छू तक नहीं पायेगा।
अंकल, तो क्या यह लॉकेट सिर्फ गरदन की ही रक्षा करेगा, शरीर के किसी और अंग की नहीं।

बेटे, चक्र फोमांचू के गले में पड़ी टी.वी. स्क्रीन से कन्ट्रोल होता है और स्क्रीन पर जो चीज दिखाई देती है, चक्र उसी पर आक्रमण करता है।
चूंकि उस स्क्रीन पर इंसान का सिर्फ गरदन तक का हिस्सा ही आता है, इसलिए चक्र केवल गरदन पर ही वार करता है।
ओह।

खैर अंकल, अब हमें कोई चिन्ता नहीं। हमारे पास भी ऐसे सुपर सूट हैं, जिन पर शायद ही कोमांचू का कोई अन्य अस्त्र-शस्त्र प्रभाव डाल सके। वह सुपर सूट स्वर्गीय प्रोफेसर भटनागर ने हमें एक बार स्पेस में जाते हुए दिये थे।
क्या तुम सच कह रहे हो?
हम अभी वह सूट आपको पहनकर दिखाते हैं। फिर आपको स्वयं विश्वास आ जायेगा।
रहीम, सूटकेस से दोनों सूट निकालकर ले आओ।
ओ.के. भइया!
रहीम दूसरे कमरे में जाकर सुपर सूट ले आया, फिर दोनों ने अपने-अपने सूट पहन लिये।
अंकल, देखने में बेशक यह पोशाक साधारण व फैंसी लगती है, लेकिन वास्तव में अनेक वैज्ञानिक चमत्कार अपने भीतर समेटे हुए है...

- क्या राम-रहीम प्रोफेसर भास्कर के घर में सुरक्षित रह सके ?
- क्या फोमांचू राम-रहीम को मौत के घाट उतारने में सफल हो सका ?
- राम-रहीम के सुपर सूटों ने क्या चमत्कार दिखाये ?
- राम-रहीम ने फोमांचू को इस बार कैसा सबक सिखाया ?

इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए पढ़ें :-